Date ___/___/___ (1) 24 April

जाने के बावजूद बंधुआ मजदूरी का यह शिकंजा बना हुआ है यद्यापि इनमें थोड़ी - बहुत कमी आयी है।

stop

(1)

Date 13/3/17

III. प्रवजन (Migration) :— अंग्रेजी शासन काल में भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना में अनेक परिवर्तनों की - प्रकारों की क्रमिक श्रृंखला प्रारंभ की है इन परिवर्तनों को लाने में नगरीकरण, औद्योगिकरण, आवागमन एवं संचार के साधन, शिक्षा आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ग्रामीण एवं नगरीय समाज में परिवर्तन की गति एक समान नहीं रही है। क्योंकि अंग्रेजों द्वारा अधिकांश उपयोग नगरों में ही स्थापित किये गये, इसीलिए नगरों का विकास तीव्रता से हुआ। प्रशासन हेतु दफ्तरों की स्थापना भी नगरों में ही की गई। स्कूल, कॉलेजों की स्थापना भी अधिकांशतः नगरों में ही की गई। इन सभी के परिणाम स्वरूप नगरों की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि होने लगी, नगरों में शिक्षा एवं रोजगार के बढ़ते हुए अवसरों ने ग्रामवासियों को अपनी ओर आकर्षित करना प्रारंभ कर दिया।

गाँव की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि तो हो रही थी किन्तु उत्पादन उस अनुपात में नहीं बढ़ पा रहा था। गाँव के रहने वाले अनेक परिवार प्रतिकूल, प्राकृतिक परिस्थितियों एवं प्राकृतिक विपदाओं के कारण फसलों के नष्ट होने से अपनी आजीविका कमाने में असमर्थ होते जा रहे थे। उनके सामने एक ही रास्ता बचा है जो उन्हें थोड़ा बहुत आशान्वित किये जा रहे है। यह रास्ता प्रवजन का रास्ता है जिसको अपना कर वे या तो उन गाँव की ओर अग्रसर हो जाते है जो ज्यादा खुशहाल है अथवा नगरों में जाते है। जहाँ मजदूरी एवं रोजगार मिलने के अवसर एवं संभावनाएँ अधिक होती है। यही एक कारण है कि भारत में हजारों लाखों लोग अपना गाँव छोड़कर दूर दराज के नगरों में चले जाते है। पर जब उन्हे नगरों में कोई रोजगार नहीं मिल पाता है तो वे दैनिक मजदूरी द्वारा अपना तथा अपने परिवार का निर्वाहन करने लगते है।

Page No. ____

Scanned with CamScanner

PG Sem II 24 April

②

Date __/__/__

प्रवर्जन का अर्थ

(Meaning of Migration)

प्रवर्जन का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति या समूह अपनी मूल स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान की ओर जाता है उसे प्रवर्जन कहा जाता है। इस प्रक्रिया का अध्ययन दो प्रक्रियों से किया जा सकता है पहले आंतरिक प्रवर्जन अर्थात् एक ही समाज के अन्तर्गत जनसंख्या का देशान्तरन और दूसरे एक देश से दूसरे देश की ओर प्रवर्जन। जहाँ तक पहले प्रकार के प्रवर्जन का प्रश्न है जो निश्चय कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के बाद भारतीयों में प्रवर्जन की प्रकृति में तीव्रता से वृद्धि हुई है। 1911 से 1951 तक भारत में प्रवर्जन (प्रक्रिया) प्रवृत्ति में केवल दो 2.7% की वृद्धि हुई थी जबकि 1951 से लेकर 1991-60 के बीच करीब 12% जनसंख्या ने प्रवर्जन किया स्पष्ट है कि देश में विकास के अनेक कार्यक्रमों ने प्रवर्जन को सुविधाजनक बनाया है। ग्रीन वुड ने सुझाव दिया कि भारत में शिक्षा वृद्धि के साथ प्रवर्जन भी बढ़ता है और यह भी प्रतिपादित किया है कि यह प्रवर्जन उन नगरों की ओर ज्यादा होता है जहाँ पहले से ही शिक्षा का स्तर ऊँचा है।

एम०एस०गोरे ने उन समस्याओं की ओर इशारा किया है जो प्रवासी जनसंख्या के कारण सामने मूल निवासियों के साथ समाजस्य को लेकर उठ खड़ी होती है। उन्होंने मुम्बई महानगर में बाहर से आए प्रवासियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया।

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन की प्रकृति

(Nature of rural Migration in India)

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन की प्रकृति समान रूप से अस्थायी होती है। गाँव से नगरों की ओर काम की तलाश करने वाले ग्रामवासी उद्योगों में श्रमिकों के रूप में काम करने लगते हैं। प्रवर्जन करने

Date ___/___/___

वाले ग्रामीणों में खेतिहार और गैरखेतिहार दोनों प्रकार की जनसंख्या होती है इनमें से अधिकांश श्रमिक अपने परिवार पैतृक गाँव में ही छोड़ आते हैं। और उन्हें जब भी मौका मिलता है वे घर वापस जाने के लिए तत्पर रहते हैं। बहुत से ग्रामवासी गाँव की सामुदायिक जीवन के कारण नगरों में रहने में असुविधा महसूस करते हैं उनके लिए परिवार को गाँव में छोड़ना इसलिए भी लाभदायक होता है क्योंकि गाँव में जीवन-यापन करना अधिक सुविधा जनक एवं कम खर्चीला होता है। स्त्रियों और बच्चों को तो खेतों में भी काम मिल जाता है यदि प्रवासी मजदूर अपने परिवार के अन्य सदस्यों को नगर में अपने साथ ले आए तो उन्हें एक तो उन्हें नौकरी नहीं मिलेगी और दूसरी आवास की समस्या एवं महगाई के कारण उनका नगर में रहना मुश्किल हो जाता है।

प्रवर्जन कर नगर में आने वाले ग्रामवासी या तो औद्योगिक श्रमिकों के रूप में काम करते हैं या किसी अन्य प्रकार की मजदूरी का कार्य करने लगते हैं। उद्योगों में काम मिल जाने के बाद भी उनकी अधिक से अधिक बार गाँव लौटने की इच्छा बनी रहती है। कई बार तो पैसे की कमी के कारण वे कई महीनों तक वे भी अपने गाँव भी नहीं जा पाते। उन्हें अपने परिवार के लिए गाँव में नियमित रूप से पैसे भी भेजवाने पड़ते हैं। जिससे गाँव के साथ उनका सम्बन्ध बना रहता है। गाँव के विस्थापन की समस्या का विश्लेषण करते हुए भारत में रॉयल कमिशन ने कहा कि "कुछ के लिए यह सम्बन्ध बहुत निकट का है और कुछ के लिए दूर का, या कभी-कभार का, कुछ के लिए तो यह एक वास्तविकता से अधिक मात्र एक प्रेरणा का ही है।" प्रायः औद्योगिक श्रमिक उस दिन की प्रतिक्षा करते रहते हैं जब कारखाने में उनका काम खत्म हो जाएगा, तो सदा के लिए अपने गाँव लौट सकते हैं।

(IV)

Date __/__/__

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन के कारक
(Causes of rural migration of in India)

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन के अनेक कारक उत्तरदायि हैं:- इनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित है:

1. **जनसंख्या में वृद्धि :-** भारत में ग्रामीण जनसंख्या में तीव्रता से वृद्धि हुई है। पर जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात में कृषि उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई है। इसके परिणाम स्वरूप गाँव में रहने वाले अनेक लोगों को गाँव में किसी भी प्रकार का कोई काम नहीं मिल पाता है। जिससे वे अपने परिवार का जीवन निर्वाह कर सकें। ऐसे परिस्थिति से विवश होकर उन क्षेत्रों की ओर प्रवर्जन करते हैं जहाँ पर आजीविका कमाने के अधिक साधन उपलब्ध होते हैं।

Date 14/03/17

2. **प्राकृतिक विपदाएँ :-** भारत में कृषि सदैव प्रकृति पर निर्भर रहती है। समय पर वर्षा होने पर फसल अच्छी हो जाती है जबकि ऐसा न होने पर फसल ठीक नहीं होती है। समय-समय पर होने वाली प्राकृतिक विपदाएँ जैसे:- महामारी, अकाल ग्रामीण रोजगार आदि भी ग्रामीण रोजगार के अवसरों पर कुप्रभाव डालती है। परिणाम स्वरूप काफी समय में लोग कृषि कार्यों से वंचित हो जाते हैं। रोजी-रोटी की समस्या उन्हें आर्थिक दृष्टि से संपन्न क्षेत्रों नगरों एवं राज्यों की ओर प्रवर्जन के लिए विवश कर देती है।

3. **निर्धनता एवं बेरोजगारी :-** बढ़ती हुई जनसंख्या एवं समय-समय पर होने वाली प्राकृतिक विपदाओं के परिणाम स्वरूप ग्रामीण भारत में निर्धनता एवं बेरोजगारी में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसीलिए ऐसे व्यक्ति रोजगार एवं जीविका उपार्जन की तलाश में स्वयं अकेले अथवा अपने परिवार के साथ नगरों तथा औद्योगिक केन्द्रों की ओर प्रवर्जन कर जाते हैं। कई बार तो अनेक गाँव के लोग सामूहिक

Scanned with CamScanner